शुल्क १५ वर्ष
३१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति १०/- रुपये
वार्षिक ३००/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष २३ : अंक १६ : नई दिल्ली : ४-१० अगस्त २०१७

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण और महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि श्रमणियां कोलकाता महानगर के राजरहाट में स्थित भव्य 'महाश्रमण विहार' में सानंद चातुर्मासिक प्रवास कर रहे है। प्रायः प्रतिदिन होने वाली वर्षा के बावजूद उमस वातावरण में व्याप्त रहती है। कोलकाता एवं आसपास के सेवार्थी बड़ी संख्या में चतुर्मास परिसर एवं उसके आसपास अवस्थिति लिए हुए हैं। गत दिनों चिकित्सार्थ अस्पताल में पधारीं महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने २ अगस्त को पूज्यप्रवर के दर्शन कर लिए हैं। १६ से २७ अगस्त को समायोज्य पर्युषण पर्व का नवाह्निक अनुष्ठान अब सन्निकट है।

परमपूज्य आचार्यप्रवर कोलकाता में

तीन कांटे निकालो, सुख मिलेगा

२४ जुलाई। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'तीन प्रकार के शल्य हैं--'माया शल्य, निदान शल्य और मिथ्यादर्शन शल्य। पैर में कांटा चुभ जाता है या कोई नुकीली चीज चुभ जाती है तो चलने में कष्टानुभूति हो सकती है। उसे निकालने से कितना आराम मिल सकता है। जैसे शरीर में चुभे हुए कांटे शरीर को कष्ट देते हैं, वैसे ही मन या आत्मा में चुभे हुए कांटे कितना मानसिक अथवा आत्मिक कष्ट देने वाले बन सकते हैं।

माया एक कांटे की तरह होती है। जो एक बार माया कर लेता है, उस व्यक्ति को उस माया को ढकने के लिए कितनी बार माया या झूठ का प्रयोग करना पड़ सकता है। सत्य का मार्ग अभय का मार्ग है। मायावी भयभीत रह सकता है। माया से भय पैदा होता है और भय कांटे की तरह चुभता है। इस प्रकार माया एक शल्य है। व्यापार में कोई आदमी माया का प्रयोग करता है, जब वह पकड़ा जाता है, तब उसे कितना कष्ट उठाना पड़ सकता है। माया मित्रों को दूर करने वाली बन जाती है। मायावी का मित्र कौन बनेगा-उसका विश्वास कौन करेगा? मायावी का विश्वास न होने से उसे दायित्व भी कौन सौंपेगा? इसलिए माया व्यावहारिक भूमिका में भी त्याज्य है।

दूसरा शल्य है निदान। अध्यात्मविहीन आकांक्षा मानों एक तरह का शल्य है। निदान आदमी की तपस्या को बेचने वाला तत्त्व है। आदमी को तपस्या कर उसके बदले में स्वर्ग, पद आदि भौतिक सुखों की इच्छा नहीं करनी चाहिए। निदान शल्य जीवन में नहीं रहना चाहिए।

तीसरा शल्य है मिथ्यादर्शन शल्य। मिथ्या दृष्टिकोण भयंकर कांटे के समान होता है। वह प्राणी को कितने जन्मों तक भ्रमण करवा सकता है। ये तीन शल्य प्राणी की आत्मा में से निकल जाते हैं तो आत्मा स्वस्थ रह सकती है। कषायमंदतायुक्त देव, गुरु और धर्म के प्रति दृढ़ श्रद्धा रहे तो मिथ्यादर्शन शल्य से बचाव हो सकता है।

शास्त्रकार ने इन तीनों शल्यों से मुक्त रहने का सुन्दर संदेश दिया है। एक ओर अध्यात्म की दृष्टि से ये तीनों त्याज्य हैं तो दूसरी ओर व्यवहार की भूमिका में भी ये श्लाघ्य नहीं हैं। आदमी को यह विश्लेषण करना चाहिए कि माया, निदान और मिथ्यादर्शन शल्य कहीं उसके भीतर तो नहीं हैं? ऐसा आत्मविश्लेषण कर वह अध्यात्म के क्षेत्र में आगे बढ़ा जा सकता है।' कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के प्रवचन के उपरान्त साध्वीवर्याजी का अभिभाषण हुआ।

उपासक सेमिनार परिसंपन्न

परमपूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में समायोजित त्रिदिवसीय उपासक सेमिनार की संपन्नता के संदर्भ में तेरापंथी महासभाध्यक्ष श्री किशनलाल डागलिया तथा उपासक शिविर व्यवस्था संयोजक श्री जयन्तीलाल सुराणा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। उपासक श्रेणी के संयोजक श्री डालिमचन्द नौलखा ने गीत को प्रस्तुति दी।

पूज्यप्रवर ने इस प्रसंग में कहा--'उपासक श्रेणी के शिविर और सेमिनार के समापन का प्रंसग है। शिविर और सेमिनार के संभागी यथासंभव स्वयं की साधना को आगे बढ़ाने का प्रयास करते रहें और धर्मसंघ की आध्यात्मिक सेवा में भी यथाशक्यता अपना योगदान देते रहें। ज्ञानशाला, उपासक श्रेणी आदि उपक्रमों के माध्यम से हमारा श्रावक समाज खूब फलता-फूलता रहे। मंगलकामना।'

परमपूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में १४ से २२ जुलाई तक उपासक प्रशिक्षण शिविर समायोजित हुआ। जिसके अन्तर्गत १८७ प्रशिक्षु संभागी बने। बताया गया कि अब तक समायोजित प्रशिक्षण शिविरों में संभागियों की यह सर्वाधिक संख्या है। शिविर में प्रशिक्षु पुरुषों को मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि जम्बूकुमारजी, मुनि कीर्तिकुमारजी, मुनि हिमकुमारजी, मुनि वर्धमानकुमारजी और समण सिद्धप्रज्ञजी से तथा प्रशिक्षु बहनों को साध्वी रचनाश्रीजी, साध्वी लब्धिप्रभाजी, साध्वी शीतलयशाजी, साध्वी कमलविभाजी, साध्वी चारुलताजी, साध्वी चन्द्रिकाश्रीजी, साध्वी प्रबुद्धयशाजी और साध्वी प्रांजलयशाजी से प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। प्रशिक्षण कार्य में उपासक श्रेणी के संयोजक श्री डालिमचन्द नौलखा, श्री निर्मल नौलखा और श्री सुरेन्द्र सेठिया का भी योगदान रहा। शिविर के अंत में आयोजित परीक्षा में १४५ व्यक्ति उपासक-उपासिका के रूप में चयनित हुए।

२२ जुलाई से २४ जुलाई तक समायोजित 'तेरापंथ दर्शन' विषयक सेमिनार में १७० उपासक-उपासिकाएं संभागी बने। संभागियों को मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि अक्षयप्रकाशजी, समण सिद्धप्रज्ञजी, साध्वी कुन्थुश्रीजी, साध्वी संगीतश्रीजी, साध्वी गुप्तिप्रभाजी, साध्वी दीप्तियशाजी, साध्वी मौलिकयशाजी, साध्वी कार्तिकयशाजी, साध्वी प्रबुद्धयशाजी और साध्वी चैतन्यप्रभाजी ने प्रशिक्षण दिया।

तीन व्यवसाय करते हुए भी मोक्ष को न भूलें

२५ जुलाई। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में परम पूज्य आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का उद्‌बोधन हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'लौकिक व्यवसाय के तीन प्रकार हैं अर्थ, धर्म और काम। व्यवसाय शब्द सामान्यतया व्यापार के संदर्भ में प्रयुक्त होता है। यहां व्यवसाय का अर्थ निश्चय, निर्णय, अनुष्ठान किया जाता है। संसार के संदर्भ में चलने वाला कार्यकलाप अथवा अनुष्ठान लौकिक व्यवसाय है। गृहस्थ के द्वारा लौकिक व्यवसाय किया जाता है, वह तीन रूप में हो सकता है--अर्थ, धर्म और काम। इन तीनों को त्रिवर्ग भी कहा गया है। गृहस्थ जीवन में आदमी को अर्थ का उपयोग करना होता है। अर्थ के बिना गृहस्थ जीवन में कठिनाई हो सकती है।

यहां धर्म से तात्पर्य शुद्ध अध्यात्म नहीं, यहां धर्म का अर्थ है--कर्त्तव्य। माता-पिता की सेवा करना और उनकी आज्ञा का पालन करना संतान का धर्म होता है। इसी प्रकार सबका अपना-अपना कर्त्तव्य होता है। कर्त्तव्य निर्वहन के लिए आदमी पुरुषार्थ करता है।

काम अर्थात वासना के संदर्भ में भी गृहस्थ पुरुषार्थ करता है। सुखैच्छा आदि के कारण वह काम में प्रवृत्त होता है। कहा गया है कि यह त्रिवर्ग न हो तो गृहस्थ जीवन व्यर्थ है। इन तीनों में भी धर्म को श्रेष्ठ

बताया गया है। कर्त्तव्य निर्वहन की भावना न हो तो अर्थ और काम भी गड़बड़ा सकते हैं।

गार्हस्थ्य में अर्थ के लिए पुरुषार्थ करना होता है, यह गृहस्थ के लिए कोई बुरी बात नहीं, किन्तु उसके साथ ईमानदारी भी रहनी चाहिए। अर्थ के अर्जन में प्रामाणिकता और उपभोग में संयम और विवेक रहे तो अर्थ अनर्थ होने से बच सकता है। जैन धर्म में इच्छा परिमाण और भोगोपभोग परिमाण व्रत का उल्लेख मिलता है। ये दोनों व्रत जीवन में आ जाते हैं तो अर्थ सार्थक बन सकता है। इसी प्रकार स्वदार/स्वपति संतोष व्रत आ जाए तो काम पर संयम का अकुंश रह सकता है। गृहस्थ जीवन के तिपहिए रिक्शे पर संयम का नियंत्रण रहता है तो वह उत्पथगामी होने से बच सकता है, सत्पथ पर चल सकता है।

आदमी को यह सोचना चाहिए कि वह इन तीनों के लिए पुरुषार्थ करता है, किन्तु मोक्ष के लिए पुरुषार्थ करता है या नहीं? मानव जीवन मोक्ष के लिए पुरुषार्थ करने का सुन्दर अवसर होता है। धार्मिक साधना, तपस्या, कोटि जप अनुष्ठान, सामायिक आदि मोक्ष के लिए किए जाने वाले अनुष्ठान हो सकते हैं। तपस्या करने के लिए चतुर्मास अनुकूल अवसर हो सकता है। इन दिनों वर्षा हो रही है। मानों प्रकृति तपस्या करने के लिए आह्वान कर रही है। हमारी एक छोटी साध्वी विशालप्रभा अभी तपस्या कर रही है, आगे बढ़ रही है। मानों प्रकृति भी सहयोग की स्थिति में है। इस प्रकार और भी कितने-कितने लोग अपने ढ़ंग से तपस्या करते हैं। तपस्या भी मोक्ष के लिए व्यवसाय है, पुरुषार्थ है।'

आचार्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन के उपरान्त 'तेरापंथ प्रबोध' आधारित आख्यान शृंखला के अन्तर्गत 'राजनगर में संत भीखणजी की बोधि प्राप्ति' का वर्णन किया।

अच्छा हो व्यवसाय, अच्छी होगी आय

२६ जुलाई। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'व्यवसाय दो प्रकार का होता है--लौकिक और सामयिक। लौकिक व्यवसाय सांसारिक होता है। श्रमणों का व्यवसाय सामयिक होता है। वह तीन प्रकार का है--ज्ञानात्मक, दर्शनात्मक और चारित्रात्मक। साधु को ज्ञानात्मक व्यवसाय करने का प्रयास करना चाहिए और चतुर्मास के दौरान तो वह प्रयत्न विशेष रूप से होना चाहिए। एक चतुर्मास के दौरान एक/दो/तीन आगम पढ़ने का लक्ष्य रखना चाहिए। प्रातःकाल का ज्यादा समय यथानुकूलता आगम स्वाध्याय में लगाने का प्रयास करना चाहिए। आगम एक महत्त्वपूर्ण खुराक होती है। चतुर्मास में यथासंभव प्रतिदिन श्रुत सामायिक हो जाए तो और भी अच्छा है। यदि वह प्रतिबद्धता के साथ संभव न हो तो यथानुकूलता १५-२० मिनिट भी आगम स्वाध्याय किया जा सकता है।'

दूसरा सामयिक व्यवसाय है--दर्शनात्मक। देव, गुरु और धर्म के प्रति पुष्ट भक्ति का भाव दर्शनात्मक व्यवसाय है।

तीसरा सामयिक व्यवसाय है--चारित्रात्मक। साधु को जब कभी मौका मिले यथासंभव तपस्या करनी चाहिए। एक माह में पांच एकासन जितना तप कर लेना चाहिए। महाव्रतों, समितियों व गुप्तियों में जागरूकता रखना चारित्रात्मक व्यवसाय है, यह मोक्ष की साधना का व्यवसाय है, श्रमणों का व्यवसाय है। यह व्यवसाय जितना आगे बढ़ेगा आध्यात्मिक सम्पति इकट्ठी हो सकेगी। इस व्यवसाय से आत्मा शुद्ध बनती है, प्रासंगिक रूप में पुण्यबंध और पुण्योदय की स्थिति भी प्राप्त हो सकती है। अच्छा व्यवसाय चलेगा तो अर्जन भी अच्छा हो सकेगा। इसलिए आदमी को सामयिक व्यवसाय में अपने समय और पुरुषार्थ का नियोजन करना चाहिए।'

आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान शृंखला के क्रम को आगे बढ़ाया। कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणीजी ने जनता को उत्प्रेरित किया। पूज्यप्रवर के प्रवचन के उपरान्त साध्वीवर्याजी का भी अभिभाषण हुआ।

शासनश्री साध्वी नगीनांजी की स्मृति सभा

गत १६ जुलाई को भायंदर में शासनश्री साध्वी नगीनांजी का प्रयाण हो गया। उनके विषय में उद्‌गार व्यक्त करते हुए परम पावन आचार्यप्रवर ने कहा--प्राप्त जानकारी के अनुसार साध्वी नगीनांजी संसारपक्ष में टाडगढ़ के पितलिया परिवार से संबद्ध थीं। वि.सं. २००६ में करीब सत्रह वर्ष की तरुणावस्था में उन्होंने आचार्य तुलसी से साध्वी दीक्षा स्वीकार की। दीक्षा के बाद करीब बत्तीस वर्षों तक वे साध्वी भत्तूजी के साथ रहीं, उनके देहावसान के बाद आचार्य तुलसी ने उन्हें अग्रगण्य नियुक्त किया। वे पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रथम मुमुक्षु के रूप में प्रविष्ट हुईं। उन्होंने लगभग अस्सी हजार कि.मी. की पदयात्रा की। चेन्नई में आयोजित 'वेजिटेरियन' कॉन्फ्रेन्स में उन्होंने अंग्रेजी भाषा में वक्तव्य दिया, जो धर्मसंघ का प्रथम अंग्रेजी भाषण बताया जा रहा है। आचार्य तुलसी के निर्देशानुसार 'विज्ञप्ति' लेखन का प्रारंभ उनके द्वारा हुआ। अनेक पुस्तकें उनकी कृति के रूप में प्रकाशित हैं। अपने जीवन में उन्होंने करीब दो हजार से अधिक उपवास, अनेक बेला-तेला आदि किए और गत चालीस वर्षों से दस प्रत्याख्यान तथा गत पैंतीस वर्षों से प्रायः निरन्तर पौरुषी तप किया। आमेट मर्यादा महोत्सव के अवसर पर मैंने उन्हें शासनश्री के रूप में संबोधित किया। वि.सं. २०७४ श्रावक-कृष्णा सप्तमी को रात्रि लगभग ७.४५ बजे उन्हें चौविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया गया तथा उसी रात्रि में करीब ८.२८ बजे उनका प्रयाण हो गया।

साध्वी नगीनांजी एक अच्छी साध्वी थीं। भत्तूजी पुराने युग की अच्छी साध्वी थीं, साध्वी नगीनांजी उनके सिंघाड़े में वर्षों तक रहीं। उनके सिंघाड़े में नगीनांजी अच्छा वक्तव्य देने वाली साध्वी थीं। मैंने वर्षों पूर्व उनका वक्तव्य सुना था। मैंने उनका इस वर्ष का चतुर्मास भायंदर के लिए निर्णीत किया था। वे मुझे अच्छी संघनिष्ठा और गुरुनिष्ठा वाली साध्वी प्रतीत हुईं, गुरु-इंगित/गुरु निर्देश को बहुत बहुमान देने वाली साध्वी लगीं। उनके रूप में एक शासनश्री साध्वी का प्रयाण हो गया। उनकी आत्मा शीघ्र मोक्षश्री का वरण करे, शुभाशंसा।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने उनके विषय में कहा--'साध्वीश्री नगीनांजी महासतियांजी ज्ञान, दर्शन और चारित्र तीनों के क्षेत्र में पुरुषार्थ करने वाली साध्वी थी। वे छोटी उम्र में ही दीक्षित हुई और उनकी दीक्षा के समय जयपुर में बाल दीक्षा का भयंकर विरोध हुआ। दीक्षित होने वाली दो बहुत कम उम्र वाली बहनों में से साध्वीश्री नगीनांजी एक थीं। गुरुदेव का संकल्प था कि दीक्षा होकर रहेंगी। उस समय दीक्षार्थिनी बहनें जब गुरुदेव के दर्शन करने गई तो गुरुदेव ने उनसे प्रश्न किया कि कदाचित् ऐसी स्थिति हो कि विरोधियों द्वारा पैदा किए जा रहे व्यवधान के कारण हम तुम्हें दीक्षा नहीं पचखा सकें तो तुम क्या करोगी। संभवतः साध्वीश्री नगीनांजी ने ही उत्तर दिया था कि हम लोग वेष परिवर्तन कर उसी समय दीक्षा पचख लेंगे। इस प्रकार छोटी-सी बालिका में भी कितना साहस था। दीक्षा के बाद उन्हें साध्वीश्री भत्तूजी महासतियांजी का सान्निध्य मिला। साध्वीश्री भत्तूजी भी हमारे धर्मसंघ की दाठीक साध्वी थीं। उन्होंने भी बहुत यात्राएं कीं। साध्वीश्री नगीनांजी के व्यक्तित्व और वक्तृत्व को निखारने में उनका बहुत योगदान रहा।

साध्वीश्री नगीनांजी ने अपने व्यक्तित्व और साधना का विकास किया। साध्वी भत्तूजी के साथ व स्वतंत्र रूप में यात्राएं कर संघ प्रभावना की। लेखन में उनकी अच्छी रुचि थी और ऐसा मानना चाहिए कि वे अन्तिम समय तक लिखती रहीं। उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनका वक्तृत्व और लेखन--दोनों अच्छे थे। उसके साथ उनका ज्ञान भी अच्छा था। उन्होंने पूरी आगमबत्तीसी का पारायण कर लिया था। गुरुदृष्टि की आराधना में वे बहुत सजग थीं। अस्वस्थता की स्थिति में काफी कठिनाई को झेलते हुए भी गुरुवचन को निभाने के लिए वे साध्वियों के सहयोग से भायंदर पहुंची। वहां पहुंचने पर उन्हें गुरुवचन निभाने की प्रसन्नता हुई। गुरु जिनके लिए यह फरमाएं कि वे अच्छी साध्वी थीं, मानना चाहिए कि वास्तव में वह एक सौभाग्यशालिनी साध्वी थी। साध्वीश्री नगीनांजी ने आखिरी दिनों तक सक्रिय जीवन जीया। उन्होंने धर्मसंघ की

अच्छी सेवा की तथा अच्छी साधना की। उनकी आत्मा उत्तरोत्तर आध्यात्मिक उत्थान करती रहे।'

मुनि आलोककुमारजी, मुनि कोमलकुमारजी और साध्वी जिनप्रभाजी ने साध्वी नगीनांजी के विषय में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। भायन्दर तेरापंथी सभा के मंत्री श्री कनक सिंघी तथा बोरीवली तेरापंथ युवक परिषद के उपाध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र चोपड़ा ने अपने विचार व्यक्त किए। परम पावन आचार्यप्रवर के साथ चतुर्विध धर्मसंघ ने साध्वी नगीनांजी की स्मृति में चार लोगस्स का ध्यान किया।

तीन मिथ्यात्व त्यागो

२७ जुलाई। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पावन आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'मिथ्यात्व तीन प्रकार का प्रज्ञप्त है--अक्रिया, अविनय और अज्ञान। मिथ्यात्व का अर्थ है असमीचीनता। जो सही न हो, वह मिथ्या है। तीन प्रकार के मिथ्यात्वों में पहला है--अक्रिया। कार्य को सही ढंग से नहीं करना अक्रिया है। जो गाली बोलता है, कटु बोलता है, उसकी वाणी असमीचीन बन जाती है। बोलने-बोलने में अन्तर हो सकता है। बोलकर आदमी प्रतिकूल परिस्थिति को अनुकूल बना सकता है तो बोलकर अनुकूल परिस्थिति को प्रतिकूल भी बना सकता है। कायिक चेष्टा भी असमीचीन या समीचीन हो सकती है। साधु को वंदन करना आदि समीचीन कायिक चेष्टा है। भोजन, चलने आदि सभी क्रियाओं में समीचीनता रहनी चाहिए। किसी के बारे में अनिष्ट चिन्तन करना मन की असमीचीन क्रिया है। दूसरे के प्रति आध्यात्मिक मंगलभावना करना मन की समीचीन क्रिया होती है।

दूसरा मिथ्यात्व है--अविनय अर्थात् संबंध विच्छेद करना। समुदाय में छोटी-मोटी बात हो जाने पर उसे छोड़ देना अविनय मिथ्यात्व होता है। तुच्छ बातों को लेकर संघ को छोड़ने की बात सोचनी भी नहीं चाहिए। धर्मसंघ का कोई सदस्य तुच्छ बातों को लेकर संघ को छोड़ने का चिन्तन करता है तो वह असमीचीन चिन्तन है। इसी प्रकार छोटी-मोटी बात को लेकर देश आदि को छोड़ने का चिन्तन करना या छोड़ देना अविनय मिथ्यात्व है।

तीसरा मिथ्यात्व है--अज्ञान। तत्त्व को नहीं जानना अथवा गलत रूप में जानना अज्ञान मिथ्यात्व है। नहीं जानने की अपेक्षा गलत रूप में जानना और ज्यादा असमीचीन है। अज्ञान अपने आप में मिथ्यात्व है। आदमी को उससे बचने का यथासंभव प्रयास करना चाहिए। प्रवचन श्रवण से भी सम्यक् ज्ञान प्राप्त हो सकता है। अक्रिया, अविनय और अज्ञान--मिथ्यात्व के इन तीन प्रकारों को छोड़कर सम्यक्त्व को स्वीकार करना चाहिए।'

अपने प्रवचन के उपरान्त आचार्यप्रवर ने 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान शृंखला के अन्तर्गत आचार्य रघुनाथजी और संत के भीखणजी के बीच हुई चर्चा का सरसशैली में वर्णन किया।

पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का उद्बोधन हुआ। आचार्यप्रवर के प्रवचन के उपरान्त साध्वीवर्याजी ने समुपस्थित जनता को उत्प्रेरित किया।

१४वां राष्ट्रीय कन्या अधिवेशन परिसंपन्न

१४वें राष्ट्रीय कन्या अधिवेशन के त्रिदिवसीय आयोजन का तीसरा दिन। आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान उस संदर्भ में प्रस्तुति का उपक्रम रहा। रायपुर से समागत तेरापंथ कन्या मण्डल द्वारा 'तेरापंथ प्रणेता जय जय हो' गीत को प्रस्तुति दी गई। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती कल्पना बैद ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'तेरापंथ कन्या मंडल का अधिवेशन हुआ है। कन्याएं सम्यक्त्व दीक्षा को स्वीकार करने, शनिवार के दिन सायं सात से आठ बजे के बीच सामायिक करने तथा पच्चीस बोल को

याद करने का लक्ष्य रखें व उसके लिए प्रयास करें तो कल्याण की दिशा में कुछ गति हो सकती है।'

इस अवसर पर महाश्रमणजी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'परम पूज्य आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में आयोजित कन्या अधिवेशन में कन्याओं का उत्साह दिखाई दे रहा है। वास्तव में कन्या की अपनी पहचान होती है। इस अधिवेशन में कन्याओं को सामंजस्य के पंख मिले हैं और उन्नति का आकाश उनके सामने है। पंखों को खोलकर उस आकाश में उड़ान भरनी है और अपने जीवन का लक्ष्य तय करना है। लक्ष्य दो प्रकार के हो सकते हैं--भौतिक और आध्यात्मिक। कन्याएं देख ही रही हैं कि हमारी साध्वियां और समणियां किस प्रकार विकास के नए-नए क्षितिज उद्‌घाटित कर रही हैं। यदि विकास के शिखरों पर आरोहण करना है तो उन्हें अपनी क्षमताओं, अर्हताओं को विकसित बनाकर ऐसा रास्ता चुनना चाहिए, जिससे गृहस्थ जीवन में आने वाली समस्याओं से निजात मिल सके। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने कन्याओं को पच्चीस बोल सीखने की प्रेरणा प्रदान की है। सीखने के साथ-साथ उन्हें व्यापक रूप से समझने का प्रयास भी करना है और हर सप्ताह सामायिक का अभ्यास कर जीवन में अध्यात्म के बीजों का वपन करना है। मैंने कहा था कि एक सेव में कितने बीज हैं, यह तो जाना जा सकता है, किन्तु एक बीज से कितने सेव उत्पन्न होंगे, यह जानना कठिन होता है। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने कन्याओं को पाथेय के रूप में विशेष बीज प्रदान किए हैं, उन बीजों को अंकुरित करके कन्याओं को विशेष फल प्राप्त करने हैं।'

कन्या अधिवेशन के संदर्भ में आयोजित उपक्रम का संचालन तेरापंथ कन्या मण्डल प्रभारी श्रीमती पुखराज सेठिया ने किया। त्रिदिवसीय कन्या अधिवेशन में ६७ क्षेत्रों की ५८० कन्याएं संभागी बनीं। 'सामंजस्य' थीम पर आधारित इस अधिवेशन के एक अन्य सत्र में संभागी कन्याओं को परम पूज्य आचार्यप्रवर की उपासना का लम्बा अवसर प्राप्त हुआ। जिसमें कन्याओं ने अपनी प्रस्तुति देकर पूज्यप्रवर से पावन प्रेरणा प्राप्त की। अधिवेशन के विभिन्न सत्रों में साध्वीप्रमुखाजी, मुख्यनियोजिकाजी और साध्वीवर्याजी से भी कन्याओं को संबोध प्राप्त हुआ। साध्वी स्वस्तिकप्रभाजी, समणी चारित्रप्रज्ञाजी, जे.डी. बिड़ला कॉलेज की प्रिंसिपल दीपाली सिंघी, डॉ. मंजू नाहटा, डॉ. मुमुक्षु शान्ता जैन, ग्राफिओजिसट एण्ड मोटिवेटर सुषमा जैन, लंदन में यंग शेफ विजेता गरिमा पोद्‌दार, मॉडरेटर ज्योति जैन, मनोवैज्ञानिक काउंसलर डॉ. नलिनी कोचर, श्रीमती ख्याति बैद, पूजा बैद आदि ने भी कन्याओं को प्रशिक्षण दिया।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती कल्पना बैद, मुख्यन्यासी श्रीमती सायर बैंगाणी, संरक्षिका श्रीमती तारा सुराणा, महामंत्री श्रीमती सुमन नाहटा, सहमंत्री श्रीमती विजयलक्ष्मी भूरा, उपाध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैद, न्यासी श्रीमती शान्ता पुगलिया, प्रचार-प्रसार मंत्री श्रीमती नीलम सेठिया, तेरापंथ कन्या मण्डल प्रभारी श्रीमती पुखराज सेठिया तथा सहप्रभारी करुणा कोठारी के भी प्रांसगिक वक्तव्य हुए।

अधिवेशन के प्रथम दिन रात्रिकालीन सत्र में कन्याओं ने 'एयर होस्टेस' की थीम पर प्रस्तुति दी। दूसरे दिन प्रातः सामंजस्य रैली का भी उपक्रम रहा। सामंजस्य थीम पर विविध प्रतियोगिताएं भी अधिवेशन में समायोजित हुईं।

अपनी क्षमतानुसार करें उपकार

२८ जुलाई। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत 'ठाणं' आगमाधारित प्रवचन माला के क्रम को आगे बढ़ाते हुए कहा--'अनुग्रह तीन प्रकार का होता है। आत्मानुग्रह, परानुग्रह और तदुभय अनुग्रह। एक आदमी केवल खुद पर उपकार करता है। दूसरा आदमी प्रमुख रूप से दूसरों पर उपकार करता है और तीसरा आदमी दोनों पर उपकार करता है। उपकार सांसारिक भी हो सकता है और आध्यात्मिक भी हो सकता है। धर्म के संदर्भ में देखें तो एक साधक केवल अपने में रहता है, एकाकी साधना करता है, वह आत्मानुग्रह करने वाला है। दूसरा व्यक्ति दूसरों को धर्म के मार्ग पर आगे बढ़ाने का प्रयास करता है, वह

परानुग्रह करने वाला व्यक्ति है। तीसरा व्यक्ति स्वयं साधना करते हुए दूसरों को धर्म के मार्ग पर बढ़ाने का प्रयास करता है, वह तदुभय अनुग्रह करने वाला व्यक्ति है। तीनों प्रकारों की अपनी-अपनी उपयोगिता हो सकती है।

अस्सी वर्ष से ज्यादा अवस्था वाला व्यक्ति स्वयं की साधना पर ज्यादा ध्यान देता है, वह उपयुक्त है। युवा अवस्था वाला साधु स्वयं साधना करता हुआ, दूसरों को धर्म के मार्ग पर बढ़ाने का प्रयास करे तो ज्यादा उपयुक्त है। जो आदमी स्वयं साधु नहीं बन सकता, किन्तु दूसरों को उसके लिए प्रेरित करता है, वह परानुग्रही व्यक्ति है। आदमी को अपनी क्षमता और स्थिति को देखकर आध्यात्मिक उपकार करने का प्रयास करना चाहिए।'

आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान शृंखला के अन्तर्गत राजस्थानी भाषा में सरस व्याख्या की। कार्यक्रम में आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व मुख्यनियोजिकाजी का उद्‌बोधन हुआ। पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में साध्वीवर्याजी का भी अभिभाषण हुआ।

जैनागम विवागसुयं का लोकार्पण

कार्यक्रम में जैनागमों के अन्तर्गत ग्यारहवें अंग 'विवागसुयं' (मूल पाठ, संस्कृत छाया, हिन्दी अनुवाद, टिप्पण तथा परिशिष्ट सहित) का लोकार्पण हुआ। आचार्यश्री तुलसी के वाचना प्रमुखत्व एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ व आचार्यश्री महाश्रमण के प्रधान संपादकत्व में इस आगम के अनुवाद व विवेचन में साध्वी विमलप्रज्ञाजी तथा साध्वी उदितयशाजी का श्रम रहा है। पूज्यप्रवर के समक्ष प्रकाशक जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री रमेशचन्द बोहरा तथा निवर्तमान अध्यक्ष श्री धर्मचन्द लूंकड़ ने 'विवागसुयं' को लोकार्पित किया। साध्वी विमलप्रज्ञाजी ने इस संदर्भ में अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त किए।

पूज्यप्रवर ने लोकार्पण से पूर्व कहा--'हमारे धर्मसंघ में आगम संपादन-अनुवादन का कार्य वर्षों से चल रहा है। गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी ने जो कार्य शुरु किया था, वह आज भी चल रहा है। हमारे कई साधु-साध्वियां इस कार्य से जुड़े हुए हैं। अनेक आगम प्रकाशित हो चुके हैं। इस शृंखला में 'विवागसुयं' भी सामने आने वाला है। वह कर्म विपाक को समझाने वाला एक अच्छा आगम है। उसमें कर्म फल का वर्णन है। आगमों का अनुवाद गृहस्थ पढ़ें तो उन्हें भी लाभ मिल सकता है। 'विवागसुयं' अपेक्षाकृत कुछ छोटा आगम है। ऐसे आगम के स्वाध्याय से वैराग्य लाभ प्राप्त हो सकता है।'

साध्वी विमलप्रज्ञाजी 'शासनश्री' अलंकरण से अलंकृत

कार्यक्रम के दौरान संयोजक मुनि दिनेशकुमारजी ने साध्वी विमलप्रज्ञाजी को वक्तव्य के लिए आहूत करते हुए भूलवश 'शासनश्री साध्वी विमलप्रज्ञाजी' नाम उच्चरित किया। आचार्यप्रवर ने फरमाया--'शासनश्री बनेगी, तब बन जाएगी।' कुछ ही क्षणों में आचार्यप्रवर ने पुनः फरमाया--मैं साध्वी विमलप्रज्ञाजी को 'शासनश्री साध्वी विमलप्रज्ञाजी' के रूप में स्वीकार कर रहा हूं।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का चिकित्सार्थ प्रस्थान

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर से अनापत्ति प्राप्त कर आज सायं महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने चिकित्सार्थ चतुर्मास स्थल से प्रस्थान किया। गत दो दिनों से उनके उच्च रक्तचाप की समस्या हो रही थी। चिकित्सकों के परामर्शानुसार आचार्यप्रवर ने त्वरित निर्णय किया और तदनुसार महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी साध्वियों द्वारा संचालित साधन से कोलकाता के सॉल्टलेक में स्थित 'आमरी हॉस्पिटल' में पधार गईं। वहां भिन्न सामाचारी में उनकी जांच एवं उपचार का क्रम प्रारंभ हो गया।

आचरण से सार्थक बनेंगे श्रवण, स्मरण और मनन

२९ जुलाई। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व मुख्यनियोजिकाजी का उद्‌बोधन हुआ। आचार्यप्रवर के पदार्पण के उपरान्त साध्वीवर्याजी ने अनुकंपा को आत्मसात करने की प्रेरणा दी।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने तीसरे अंग आगम 'ठाणं' पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'एक आदमी किसी श्रमण-माहन की उपासना करता है। श्रमण अर्थात् जो त्यागी-संयमी है और माहन अर्थात् जो हिंसा न करने का उपदेश देने वाला है तथा स्वयं हिंसा से विरत है, ऐसे साधु की पर्युपासना करने से श्रवण का मौका मिल सकता है। साधु के निकट बैठना पर्युपासना होती है। साधु के पास मौनपूर्वक शुद्ध भावना से बैठने से भी निर्जरा का लाभ प्राप्त हो सकता है। उनकी पर्युपासना से धर्म श्रवण का लाभ मिल सकता है। साधु से कुछ आध्यात्मिक बात सुनना भी अपने-आप में लाभ है। साधु की पर्युपासना से मिलने वाले लाभों की शृंखला जुड़ी हुई है। आदमी सुनकर कल्याण और पाप दोनों को जानता है अर्थात् श्रेय और हेय को जानता है। सुनकर हेय को छोड़ने और श्रेय का समाचरण करने का प्रयास करना चाहिए।

श्रोता को लाभ मिले अथवा न मिले, आत्म कल्याण की भावना से प्रवचन करने वाला प्रवचनकार स्वयं लाभान्वित हो सकता है। प्रवचन की जिम्मेदारी वाले साधु को श्रम की परवाह किए बिना आत्मकल्याण की भावना से प्रवचन करना चाहिए। प्रवचन प्रारंभ करने के लिए निर्धारित समय यथासंभव अतिक्रमण नहीं करना चाहिए। साधु की पर्युपासना से अनेक लाभ मिल सकते हैं। साधु की पर्युपासना में बैठने का मौका मिले तो यथावसर अपेक्षानुसार तत्त्व संबंधी जिज्ञासा भी करनी चाहिए। आदमी यदि प्रवचन के सुनने के बाद सायंकाल यह स्मरण कर ले कि आज मैंने प्रवचन में क्या सुना? स्मरण के बाद उस पर मनन करने से वह श्रवण व स्मरण और ज्यादा सार्थक बन सकता है। श्रवण को सार्थक बनाने वाला तत्त्व है स्मरण। स्मरण मनन से सार्थक बनता है। मनन आचरण से सार्थक बनता है, इसलिए श्रवण के बाद स्मरण, मनन और आचरण होना चाहिए।

प्रवचन के समय सामान्यतया बीच में बातें नहीं करनी चाहिए। हालांकि हमारी सभा में मुझे बहुत ही सुन्दर व्यवस्था लग रही है। इतनी बड़ी सभा में भी कोई शोरगुल सुनाई नहीं दे रहा है। मुझे याद है, पहले कुछ-कुछ बातें हुआ करती थीं, किन्तु अब मैं देख रहा हूं कि इतनी बड़ी परिषद होते हुए भी शांति है। काफी लोग पंक्तिबद्ध सामायिक में बैठे दिखाई दे रहें हैं, यह अच्छी बात है। शांति, व्यवस्था व शालीनता तथा श्रोताओं में प्रवचन श्रवण की उत्सुकता का रहना परिषद् की गरिमा होती है। इस संदर्भ में लगता है कि हमारी परिषद् गरिमामय परिषद् है। त्यागी और ज्ञानी साधु के प्रवचन श्रवण का मौका मिलना बहुत अच्छी बात होती है।'

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान शृंखला के अन्तर्गत संत भीखणजी द्वारा स्थानकवासी परंपरा से अभिनिष्क्रमण तथा श्मशान में प्रथम रात्रिवास का वर्णन किया। प्रेक्षा प्रशिक्षक श्री पारसमल दूगड़ ने मुद्रा विज्ञान के संदर्भ में प्रस्तुति दी। श्री हंसराज भंसाली ने अपनी तपस्या के २४वें दिन पूज्यप्रवर से २८ दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

श्रवण से मिलता है ज्ञान

३० जुलाई। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'साधु की पर्युपासना से श्रवण का अवसर मिलता है। सुनने से ज्ञान प्राप्त होता है। प्राचीनकाल में शिष्य गुरु से श्रवण के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करते थे। सुनने वाले व्यक्ति में तार्किक शक्ति हो तो तर्क से ज्ञान और ज्यादा पुष्ट हो सकता है। संतों के मुख से धर्म श्रवण का मौका मिलना जीवन का एक अच्छा अवसर होता है। दृष्टांतों के साथ आध्यात्मिक ज्ञान समझाने वाले साधु से ज्ञान श्रवण का मौका

मिले तो वह और भी महत्त्वपूर्ण होता है। समझाने वाला साधु हेतु और दृष्टांतों के साथ समझाए और सुनने वाला तार्किकता के साथ समझने का प्रयास करे तो श्रवण से ज्ञान और ज्यादा पुष्ट हो सकता है।'

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन के पश्चात् 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान शृंखला को आगे बढ़ाया। कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व मुख्यनियोजिकाजी का उद्बोधन हुआ। आचार्यप्रवर के पदार्पण के पश्चात् साध्वीवर्याजी का वक्तव्य हुआ।

आचार्यप्रवर ने अस्पताल में उपचाराधीन महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी के स्वास्थ्य लाभ की मंगलकामना के साथ 'विघ्न हरण मंगल करण' पद्य का तीन बार पाठ किया।

द्विदिवसीय मेधावी छात्र सम्मान समारोह समायोजित

कार्यक्रम में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्त्वाधान में आयोजित द्विदिवसीय मेधावी सम्मान समारोह का मंचीय उपक्रम समायोजित हुआ। इस संदर्भ में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाश मालू, मेधावी छात्र प्रोत्साहन योजना के चेयरमेन श्री विजय कोठारी तथा संयोजक श्री राकेश चोरड़िया ने परियोजना के विषय में अवगति देते हुए अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर ने इस प्रसंग में कहा--'मेधावी छात्र-छात्राओं के जीवन में ज्ञान का विकास होना चाहिए। विद्यालयी, महाविद्यालयी आदि ज्ञान के विकास के साथ कुछ धार्मिक ज्ञान भी विकसित होना चाहिए। पच्चीस बोल याद कर लिया जाए या याद रख लिया जाए और जीव-अजीव पुस्तक से उन्हें समझ लिया जाए तो जैन धर्म का प्रारंभिक ज्ञान मेधावी छात्र-छात्राओं को हो सकेगा। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम मेधावी छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित करने का प्रयास करता है। ये छात्र-छात्राएं अच्छे आचारी और अच्छे व्यवहारी बनकर उभरे। मंगलकामना।'

द्विदिवसीय मेधावी छात्र सम्मान समारोह में ३६८ मेधावी छात्र-छात्राएं संभागी बने। समारोह के विभिन्न सत्रों में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि आलोककुमारजी, मुनि अनेकान्तकुमारजी, समण सिद्धप्रज्ञजी, साध्वी चैतन्यप्रभाजी और समणी चारित्रप्रज्ञाजी से प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष श्री प्रकाश मालू, निवर्तमान अध्यक्ष श्री सलिल लोढ़ा, महामंत्री श्री नवीन पारख, श्री संजय जैन, श्री प्रदीप चौपड़ा, मेधावी प्रोत्साहन परियोजना के चेयरमेन आई आर एस श्री विजय कोठारी, श्री कमलेश चन्द्रा, श्री विक्रम सेठिया, श्री प्रकाश नाहटा, श्री गौतम दूगड़, डॉ. बलवन्त चोरड़िया, श्री राज सिंघवी, श्री अंकुर बोरदिया, श्री राकेश सिंघी, श्री सुशील चौपड़ा तथा श्री गणेश बैद ने भी इस आयोजन में अपनी-अपनी प्रस्तुति दी।

विज्ञान की ओर बढ़ो, सन्मार्ग मिलेगा

३१ जुलाई। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व मुख्यनियोजिकाजी का अभिभाषण हुआ। साध्वीवर्याजी ने आचार्यप्रवर के पदार्पण के पश्चात् अपने वक्तव्य में सम्यक्त्व के लाभों की चर्चा की।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'साधु की पर्युपासना का पहला लाभ है--श्रवण। श्रवण का लाभ है ज्ञान। ज्ञान का लाभ है विज्ञान। अनुभवसिद्ध अथवा प्रयोगसिद्ध ज्ञान विज्ञान होता है। मिश्री मीठी होती है, यह जानना ज्ञान है और उसे चखकर मिठास का अनुभव करना विज्ञान होता है। इस प्रकार साधुपन के आनंद के बारे में जानना ज्ञान और साधु बनकर उस आनंद का अनुभव करना विज्ञान होता है। हेय और उपादेय का पृथक-पृथक विवेचन करना भी विज्ञान है।

पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान शृंखला के अन्तर्गत आचार्य रघुनाथजी और मुनि भीखणजी के बीच हुई चर्चा का वर्णन किया।

पूज्यप्रवर का श्री भागवत के साथ वार्तालाप

२३ जुलाई को कार्यक्रम के उपरान्त परमाराध्य आचार्यप्रवर और राष्ट्रीय स्वयं सेवक के सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत के बीच संक्षिप्त वार्तालाप का क्रम रहा। यहां प्रस्तुत है उस वार्तालाप के अंश। श्री भागवत ने पूज्यप्रवर को वंदन कर अपने साथ आए कार्यकर्ताओं का परिचय दिया। पूज्यप्रवर ने श्री भागवत को सम्यक्त्व दीक्षा के विषय में जानकारी प्रदान कर और उनकी उपस्थिति में कुछ इच्छुक लोगों को करीब ११.११ बजे से सम्यक्त्व दीक्षा प्रदान की।

श्री भागवत : आज जो जिज्ञासा-समाधान का क्रम चला, वह बहुत अच्छा लगा। मुझे स्वयं उससे बहुत कुछ सीखने को मिला।

पूज्यप्रवर ने गुवाहाटी के बाद की यात्रा की अवगति प्रदान की। श्री भावगत ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ता श्री सीतारामजी द्वारा करीब चार साल ग्यारह माह तक भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में की गई यात्रा के विषय में जानकारी प्रस्तुत की।

श्री भागवत : आचार्यश्री! आपके नागपुर पधारने की संभावना किस वर्ष में है? हैदराबाद के बाद या और कभी?

आचार्यप्रवर : अभी रास्ता तय नहीं किया है, कौनसा रास्ता बनेगा, उस पर निर्भर करता है।

श्री भागवत : मैं आपसे जब भाग्यनगर में मिलूंगा, तब आपके नागपुर पदार्पण की दिनांक तय कर लेंगे। तब तक आपका आगे का यात्रा कार्यक्रम भी निश्चित हो जाएगा। आप जब नागपुर पधारें, मेरी भी वहीं रहने की इच्छा है। आचार्य तुलसीजी नागपुर आए थे, ऐसा मैंने सुना है। उस समय हमारे गुरुजी थे। आप एक बार फिर से इतिहास की पुनरावृत्ति कर दें।

पूज्यप्रवर ने उन्हें चेन्नई तक के यात्रा कार्यक्रम की जानकारी प्रदान की।

श्री भागवत : चेन्नई में तो मैं आउंगा ही।

आचार्यप्रवर ने वार्तालाप के दौरान उपस्थित मुख्यनियोजिकाजी, मुख्यमुनिश्री और समणी नियोजिकाजी का परिचय श्री भागवत को दिया।

श्री भागवत : उपासक श्रेणी क्या होती है?

आचार्यप्रवर : हम साधु श्रेणी में हैं। समणियां समणश्रेणी में हैं। हम लोग वाहन का उपयोग सामान्यतया नहीं करते, समणियां वाहन का उपयोग कर सकती हैं। ये भी संन्यासी श्रेणी में ही हैं। गृहस्थों में से एक नई श्रेणी बनाई गई, उसका नाम है उपासक श्रेणी। उस श्रेणी के सदस्यों को जैन धर्म के प्रवक्ता/ज्ञाता बनाकर जैन धर्म में प्रतिवर्ष नवाह्निक रूप में समायोजित होने वाले पर्युषण महापर्व की आराधना करवाने के लिए जगह-जगह भेजा जाता है। भाद्रव मास में आयोजित होने वाला पर्युषण महापर्व हमारे यहां धर्माराधना का सर्वोच्च समय माना गया है। हम लोग सब जगह जा नहीं पाते तो उपासक-उपासिकाओं के ग्रुप जगह-जगह जाकर धर्माराधना करवाते हैं। उसके अलावा भी जैन धर्म, प्रेक्षाध्यान आदि के प्रचार-प्रसार क्षेत्र में उनका उपयोग हो सकता है।

श्री भागवत : हमारे यहां ऐसे कार्यकर्ता अल्पकालीन विस्तारक के रूप में हैं। वे आठ दिन से दो-तीन माह तक अपने परिवार से फुर्सत लेकर आते हैं और पूरा समय कार्य करते हैं।

श्री भागवत : आज मैंने जो जिज्ञासाओं के उत्तर दिए, उसमें आपको हमारे लिए कुछ बताना है क्या?

आचार्यप्रवर : आप तो स्वयं मनीषी हैं। मेरे ख्याल से बहुत ही अच्छे उत्तर थे।

श्री भागवत : उसमें कोई सुधार करना हो तो बताएं। क्योंकि उसमें गलती रह गई तो वही सब जगह

जाएगा। इसलिए ऐसा कुछ सुधार हो तो जरूर बताएं।

आचार्यप्रवर : अभी तो ऐसी कोई बात ध्यान में नहीं आ रही है, जो मैं आपको सुधार के लिए बताऊं। हमारे उत्तर में कोई बात हो तो आप हमें बताएं।

श्री भागवत : नहीं, नहीं, नहीं, मेरा ज्ञान अल्प का है, इसलिए आपसे पूछा। आपको मैं क्या बताऊं?

आचार्यप्रवर : जिज्ञासा-समाधान के क्रम से बात और ज्यादा स्पष्ट हो सकती है।

श्री भागवत : जी, यह बहुत अच्छा क्रम रहा। संघ में भी जिज्ञासा-समाधान कार्यक्रम रहता है। जब मैं संघ शिक्षा वर्ग में जाता हूं, तब एक लम्बा सत्र इसी के लिए रहता है कि स्वयंसेवकों के मन में जो प्रश्न हों, वे उन्हें मुक्त होकर पूछें, ताकि उनकी जिज्ञासा शान्त हो सके।

आचार्यप्रवर : मैं शान्ति निकेतन भी गया था, तो वहां के कार्यक्रम में भी मेरे वक्तव्य के पश्चात् जिज्ञासा समाधान का क्रम रहा था। जिसमें वहां के कुलपतिजी, प्रोफेसर्स आदि ने अपनी जिज्ञासाएं रखी थीं। नव नालन्दा महाविहार के कार्यक्रम में भी यह क्रम रहा था।

श्री भागवत : यह बहुत अच्छा है, इससे पूछने वाले का चिन्तन भी बढ़ता है और एक ऊर्जा पैदा होती है।

आचार्यप्रवर : (मंगलकामना करते हुए) खूब अच्छा कार्यक्रम चले, अच्छी साधना चले।

श्री भागवत : जी, कार्य अच्छा चल रहा है।

मुख्यनियोजिकाजी : भागवतजी की बात सुनकर मुझे पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री की बात याद आ गई, वे जब कार्यक्रम में आईं तो अपने वक्तव्य में आचार्यप्रवर से बोलीं कि आप मेरी कोई भी त्रुटि देखें तो मुझे जरूर बताएं, मैं उसमें परिष्कार करने का प्रयत्न करूंगी। भागवतजी ने भी आज आचार्यश्री से यही निवेदन किया। यह बड़प्पन का लक्षण है।

श्री भागवत : इसमें बड़प्पन क्या है? हमें तो मनुष्य बनाने का कार्य करना है, वह कार्य निर्दोष होना चाहिए। हम उसके लिए अनुभवी तो हैं, किन्तु मनुष्य को सही रूप में जानने वाले वे ही होते हैं, जो आध्यात्मिक होते हैं। इसलिए आचार्यश्री जैसे महापुरुष से पूछकर अपनी त्रुटियां ठीक कर लेनी चाहिए।

आचार्यप्रवर ने श्री भागवत को जाने से पूर्व मंगलपाठ सुनाया।

तेरापंथ कॉन्फ्रेन्स का समायोजन

परम पावन आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में २० जुलाई से २४ जुलाई २०१७ तक 'तेरापंथ कॉन्फ्रेन्स' का समायोजन हुआ। इस कॉन्फ्रेन्स का मुख्य विषय था सन् २०३० की संपन्नता के क्षण में तेरापंथ की आध्यात्मिक समृद्धि कितनी ऊंचाई तक पहुंचाई जा सकती है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ में उस समय साधुओं की संख्या, साध्वियों की संख्या और समणश्रेणी के सदस्यों की संख्या कितनी हो जानी चाहिए। कॉन्फ्रेन्स में साध्वीप्रमुखाजी, मुख्यमुनिश्री, साध्वीवर्याजी सहित समीक्षा परिषद् के गुरुकुलवासस्थ कई चारित्रात्मा सदस्य, समणी नियोजिका, कई अग्रणी समणियां तथा कल्याण परिषद् के कुछ पार्षद व केन्द्रीय संस्था के अनंतर पूर्ववर्ती कार्यकाल के कुछ अध्यक्ष संभागी बने। आचार्यप्रवर के सान्निध्य में आयोजित कॉन्फ्रेन्स के दस सत्रों में कई संभागियों ने पत्र वाचन अथवा वक्तव्य के माध्यम से अपनी-अपनी प्रस्तुतियां दीं। सत्रों में विषयानुरूप लक्ष्य निर्धारणा, उसकी प्राप्ति का प्रारूप और प्रविधि भी तैयार की गई। इसके अतिरिक्त गहन विमर्श के बाद कई महत्त्वपूर्ण संघीय निर्णय भी लिए गए। इन सत्रों के अतिरिक्त मुख्यमुनिश्री और मुख्यनियोजिकाजी के उपपात में विषयबद्ध समूह चर्चा का उपक्रम भी रहा।

12 Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/15-17 Wed.-Thu.
Date of Publication : 07-08-2017 L.No.-U (C) 200/2015-2017
(Page 1-12) Licence to Post without Pre-payment
4-10 अगस्त 2017 Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

शासनश्री मुनि राकेशकुमारजी का प्रयाण, प्रयाणोपरान्त शासन गौरव अलंकरण प्रदत्त

३० जुलाई को अहमदाबाद प्रवासित शासनश्री मुनि राकेशकुमारजी का प्रयाण हो गया। पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में ३ अगस्त को उनकी स्मृति सभा का उपक्रम रहा। जिसमें आचार्यप्रवर ने मुनि राकेशकुमारजी को प्रयाणोपरान्त 'शासन गौरव' के रूप में संबोधित किया। सभा की विस्तृत रिपोर्ट पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

आचार्य महाप्रज्ञ वाङ्मय : एक अनुरोध

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञ के पत्र, सन्देश एवं संस्मरणों का संकलन कार्य गतिमान है। आचार्यवर ने अनेक साधु-साध्वियों एवं समण-समणियों को समय-समय पर पत्र एवं सन्देश प्रदान किए हैं। श्रावक समाज को भी यथावसर पूज्यवर के सन्देश प्राप्त हुए होंगे।

आचार्यवर की उपासना आदि के क्षणों में अनेक अविस्मरणीय प्रेरक संस्मरण/घटनाएं घटित हुई होंगी।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ से संबद्ध पत्र/ सन्देश की प्रतिलिपि एवं अविस्मरणीय संस्मरण/ घटना-प्रसंग जिन्होंने अभी तक प्रेषित नहीं किए हैं, वे यथाशीघ्र प्रेषित करें, जिससे उसका यथोचित उपयोग किया जा सके।

• सम्पर्क सूत्र •

ई मेल : jainvishvabharti@yahoo.com तथा campoffice13@gmail.com,
मोबाइल : 08290626767, 07044448888

सुधारकर पढ़ें

- वर्ष २३ अंक १३ के पृष्ठ ७ की नीचे से दूसरी व पृष्ठ आठ की प्रथम पंक्ति में प्रकाशित 'नाहर' को 'नाहटा' पढ़ा जाए।
- वर्ष २३ अंक १६ के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित चातुर्मासिक प्रवास सूची में बीकानेर संभाग के अंतर्गत क्रमांक ४ में छापर सेवाकेन्द्र पढ़ा जाए तथा पृष्ठ ४ पर प्रकाशित विशेष दिवसों के अंतर्गत २१५वां भिक्षु चरमोत्सव ४ सितम्बर २०१७ पढ़ा जाए।

पत्र व्यवहार की दृष्टि से हमारा पता है--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ फोन नं-७३८४४३९५६०, ०७३८४४३९५६२
दिल्ली कार्यालय का नं.-२३२३४६४१, ९३१०२३४६४१

•

स्वामी आदर्श साहित्य संघ के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक हेमराज बैद के द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-९, नवीन शाहदरा, दिल्ली ११००३२ से मुद्रित एवं आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली ११०००२ में प्रकाशित। सम्पादकः केशवप्रसाद चतुर्वेदी